Prabhat Khabar (Date: - 22/09/2019)

विकसित होंगे प्लाइवुड, लकड़ी और बांस आधारित उद्योग

पटना. राज्य में प्लाइवुड, लकड़ी और बांस आधारित उद्योगों का विकास होगा. इस संबंध में कमियां जानने और नयी नीति बनाने के मकसद से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 30 सितंबर को उद्यमी पंचायत की बैठक लेंगे. इसमें वे पॉप्लर लगाने वाले किसानों और व्यवसायियों के प्रतिनिधियों से बात करेंगे. इसकी तैयारी में पर्यावरण, वन व जलवायु परिवर्तन विभाग ने राज्य के प्लाइवुड, लकड़ी और बांस आधारित उद्योग के व्यवसायियों के साथ एक बैठक की.अरण्य भवन में आयोजित इस बैठक की अध्यक्षता विभाग के प्रधान सचिव दीपक कुमार सिंह ने की. इस बैठक में यह जानकारी मिली कि पॉप्लर के बिक्रेताओं (किसानों) और खरीदारों को एक दूसरे के बारे में

जानकारी नहीं रहने से लकड़ी आधारित उद्योगों का विकास नहीं हो रहा है. बैठक में व्यवसायियों ने बताया कि प्लाइवुड बनाने के लिए उन्हें पॉप्लर की लकड़ियां नहीं मिल रही हैं. इस पर प्रधान सचिव दीपक कुमार ने कहा कि राज्य में तीन करोड़, 20 लाख पॉप्लर लगाये गये हैं. इसमें से करीब एक करोड़ उद्योगों के लायक हैं. बैठक में पीसीसीएफ (विकास) एके पांडे, एडिशनल पीसीसीएफ (कैंपा) राकेश कुमार सहित अन्य मौजूद थे.

Prabhat Khabar (Date: - 22/09/2019)

सौगात. महिला उपडाकघर के उद्घाटन में रविशंकर प्रसाद बोले

सूबे में खुलेंगे 24 महिला डाकघर

संवाददाता ▷ पटना

देश के 652 डाक डिवीजन के साथ ही बिहार के 24 डाक डिवीजनों में एक-एक महिला डाकघर खुलेगा. नारी शक्ति आगे नहीं बढ़ेगी, तो देश में स्थायी शक्ति नहीं बढ़ेगी. ये बातें केंद्रीय मंत्री विधि, न्याय व संचार मंत्री रवि शंकर प्रसाद ने शनिवार को बीपीएससी महिला उपडाकघर के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहीं.

उन्होंने कहा कि मेरी इच्छा थी कि पटना में देश का पहली महिला डाकघर खुले. वह आज पूरा हो गया. पहले महिला डाकघर को उद्घाटन करते हुए मुझे काफी गर्व महसूस हो रहा है. यहां से नारी सशक्तीकरण का संदेश पूरे देश में पहुंचेगा. प्रसाद ने कहा कि बिहार में अब तक 1.50 लाख बच्चों के खाते डाक घर में खुले हैं. उन्होंने बिहार सर्किल के चीफ पोस्ट मास्ट जनरल को निर्देश दिया कि यह महिला डाकघर शो केस पोस्ट ऑफिस होना चाहिए, ताकि देश-विदेश के आने वाले विदेशी पर्यटकों तथा अतिथियों को यहां विजिट कराया जा सके. डाक विभाग के सारे उत्पाद भी यहां उपलब्ध होने चाहिए.

गांधीजी से जुड़े रिकॉर्ड खंगाले विभाग : केंद्रीय मंत्री ने कहा कि महात्मा गांधी का बिहार से विशेष लगाव रहा था. महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के मौके पर डाक विभाग गांधी जी से जुड़े अपने पुराने रिकॉर्डों को खंगाल सकता है. इसके लिए विशेष परिश्रम करना होगा.

महिला उपडाकघर के उद्घाटन के मौके पर केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद के साथ सेल्फी लेतीं महिलाएं.

1023 फास्ट ट्रैक कोर्ट खोले जायेंगे

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि बच्चियों के साथ रेप की घटना न हो इसे लेकर केंद्र सरकार ने पॉकसो कानून को काफी कड़ा किया है. बलात्कार मामले के निबटारे के लिए 1023 फास्ट ट्रैक कोर्ट खोले जा रहे हैं. उन्होंने कहा कि किसी भी हाल में बिहार का सिर झुकने नहीं दूंगा. इसके अलावा समारोह को कुम्हार के विधायक अरुण कुमार सिन्हा तथा विधायक संजीव चौरसिया ने भी संबोधित किया.

महिला डाकिया ने सौंपा स्पीड पोस्ट : इसके पूर्व केंद्रीय मंत्री रवि शंकर प्रसाद और बीपीएससी के चेयरमैन शिशिर सिन्हा को महिला डाकिया कामिनी ने स्पीड पोस्ट मोबाइल एप के जरिये डिलीवर किया. इस मौके पर हर्षिका सिंह और अंशिका सिंह का सुकन्या खाता और शमी शुभम को बचत खाता का पास बुक सौंपा गया.

ये रहे मौजूद : डाक विभाग के चीफ पोस्ट मास्टर जनरल एमइ हक, निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय) शंकर प्रसाद, पटना डिवीजन के सीनियर डाक अधीक्षक हम्माद जफर, पोस्ट मास्टर जनरल अनिल कुमार, अशोक कुमार, पटना जीपीओ के चीफ पोस्ट मास्टर राजदेव प्रसाद, बीएसएनएल के सीजीएम जीसी श्रीवास्तव, प्रधान महाप्रबंधक एस राजहंस आदि मौजूद थे.

पहला डाकघर कहने पर उठे सवाल : केंद्रीय मंत्री ने बीपीएससी महिला उप डाकघर को देश का पहला डाकघर बताया, लेकिन यह बिहार का दूसरा महिला डाकघर है. 2013 में गया में बिहार के पहले महिला डाकघर का उद्घाटन हुआ था. इस संबंध में बात करने के लिए जब चीफ पोस्ट मास्टर जनरल एमइ हक और निदेशक शंकर प्रसाद से संपर्क किया गया, तो उन्होंने कॉल रिसीव नहीं किया.

Prabhat Khabar (Date: - 22/09/2019)

लंदन में दिखेगी पटना की बेटी की फिल्म

डॉटर्स डे पर विशेष

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

फोटोग्राफी सीखने जा चुकी हैं चीन और मिस्र

बेटियों को अगर पढ़ाया और आगे बढ़ाया जाये तो वह कामयाबी के हर मुकाम को हासिल कर सकती हैं. इस बात को एक बार फिर से साबित किया है पटना की बेटी आयुषी सावर्ण ने. आयुषी की बनायी 50 मिनट की फिल्म अब लंदन में आयोजित फिल्म फेस्टिवल में आगामी 28 सितंबर को दिखायी जाने वाली है.

महज 23 वर्ष की आयुषी ने यंग फिल्म निर्माताओं के बीच अपनी खास पहचान बनायी है. इनकी बनायी इस फीचर लेंथ फिल्म का नाम है डियर. इसकी निर्माता और निर्देशक दोनों आयुषी ही हैं. उनसे हमने बात की और जाना कि कैसे इतनी कम उम्र में फिल्म मेकिंग से जुड़ी. आयुषी बताती हैं कि फिल्म मेकिंग को लेकर बचपन से ही शौक था. यह शौक तब आगे बढ़ा जब 2018 में नैनीताल में फिल्म मेकिंग की एक वर्कशॉप में हिस्सा लिया.

फिर एक फिल्म फेस्टिवल में कई लोगों से मिलने का मौका मिला जिसके बाद हमारी एक टीम बनी और फिर नैनीताल में ही हमने इसकी शूटिंग शुरू की. फिल्म की कहानी मोहित मिश्रा ने लिखी है. लंदन के फिल्म फेस्टिवल में इसका चयन होगा इसकी उम्मीद नहीं थी. लेकिन जब इसकी खबर आयी तो बेहद खुशी हुई. आयुषी बताती हैं कि मेरा घर पटना के कंकड़बाग में है. दसवीं संत माइकल स्कूल और 12वीं नोट्रेडम एकेडमी से किया. इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के गार्गी कॉलेज से स्नातक किया है.

फोटोग्राफी का भी काफी शौक है, दुनिया के बेहतरीन फोटोग्राफरों से सीखने के लिए चीन और मिस्र में जाकर दो - दो महीने की इंटर्नशिप कर चुकी हूं. अभी मुंबई में हूं और अगले महीने से मशहूर फिल्म निर्देशक अनुभव सिन्हा को असिस्ट करूंगी. आयुषी कहती हैं कि अब फिल्म मेकिंग में ही करियर बनाना है. मैं अपने राज्य बिहार के लिए काफी कुछ करना चाहती हूं. अच्छी क्वालिटी की भोजपुरी फिल्में भी बनाना चाहती हूं. मेरे अब तक के इस सफर में मम्मी अंजना चौधरी और पापा अतुल कुमार का बहुत सपोर्ट रहा है. उन्होंने प्रोत्साहित किया और कहा कि अपनी पसंद का करियर बनाओ.

Prabhat Khabar (Date: - 22/09/2019)

ग्रामीण लड़कियों को हिंदी साहित्य रचते देखने की है इच्छा : उषा किरण

पटना. हिंदी और मैथिली की मशहूर लेखिका पद्मश्री उषा किरण खान को हिंदी साहित्य के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक भारत– भारती से नवाजा जायेगा. यह सम्मान स्त्री लेखन को मिला सम्मान भी माना जा रहा है. महादेवी वर्मा के बाद उषा किरण खान दूसरी महिला साहित्यकार हैं जिन्हें यह मिला है. ऐसे में हमने उनसे स्त्री लेखन के विभिन्न आयामों पर बातें कीं. पेश हैं उसके अंश.

उषा किरण खान कहती हैं कि मौजूदा दौर में स्त्रियां खूब लिख रही हैं. हालांकि अभी लेखन में पढ़ी- लिखी शहरी औरतें ही हैं. लेकिन मुझे खुशी तब होगी जब मेरे उपन्यासों की पात्र ग्रामीण महिलाएं या कोई भी ग्रामीण महिला हिंदी साहित्य में नाम कमाती दिखेगी. यह दिन मेरे लिए हर्ष का दिन होगा. दुख की बात है कि आज भी ग्रामीण महिलाएं लिख नहीं पा रही हैं. जरूरत है इनकी हौसला अफजाई की, महिलाओं में काबिलियत की कमी नहीं है बस उन्हें मौका दें और परिवार का सहयोग मिले तो वह बहुत कुछ कर सकती हैं. समाज में जब

भी कोई गंभीर बहस होती है तो उसमें महिलाएं कम ही हिस्सा लेती है. ऐसे में स्त्री लेखन को बढ़ावा देने के लिए ही पटना में मेरी जैसी कुछ महिलाओं ने मिल कर 2015 में आयाम नाम की संस्था बनायी थी. अभी मैं इसकी अध्यक्ष भी हूं. आयाम स्त्रियों को साहित्य लेखन से जोड़ने का एक मंच है. यहां महिलाएं अपनी रचनाओं को महिलाओं के बीच ही पढ़ती है ताकि उनका संकोच दूर हो और वह बड़े मंचों पर उसे पढ़ सके. उषा किरण बताती हैं कि मुझे लेखन की प्रेरणा नागार्जुन से मिली. वह पिता की तरह थे, उनकी रचनाओं को खूब पढ़ा. मेरे लिए वह प्रेरणा के स्त्रोत थे. इन दिनों अपनी जीवनी लिख रही हूं, इसमें जीवन के विविध पक्षों के साथ ही हिंदी साहित्य के कई मशहूर लेखकों से जुड़े संस्मरण भी होंगे. अज्ञेय, नागार्जुन, दिनकर, शमशेर बहादुर सिंह, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि से जुड़े संस्मरण इसमें लिख रही हूं.